प्रेमचंद : परिचय

साहित्य के क्षेत्र में प्रेमचंद का नाम बड़े आदर के साथ लिया जाता है। बहुआयामी व्यक्तित्त्व के धनी प्रेमचंद का जन्म 31 जुलाई 1880 ई. में बनारस के पास लमही नामक ग्राम में एक कायस्थ परिवार में हुआ था। इनके बचपन का नाम धनपतराय था किंतु प्यार से दादा इन्हें नवाब कहकर बुलाया करते थे। दादा किसान थे और पिता अजायबराय डाकखाने में मुंशी का काम किया करते थे। इस निम्न मध्यवर्गीय परिवार का खर्च किसानी और 20 रुपये के मासिक वेतन से चलता था।

प्रेमचंद की प्रारम्भिक शिक्षा घर पर ही हुई। माँ की मृत्यु और पिता द्वारा दूसरा विवाह किए जाने से बचपन काफी यंत्रणा में बीता। विमाता द्वारा दिए गए दुःखों से बालमन विचलित हो गया जिसने जीवन को गहरे तक प्रभावित किया। बचपन से ही कुशाग्रबुद्धि होने के कारण उन्होंने अध्ययनकाल में ही उर्दू, फारसी और अंग्रेजी कथा साहित्य को बड़े चाव से पढ़ा और आत्मसात किया। मात्र नवीं कक्षा की पढ़ाई के दौरान पिता का साया भी उठ गया इस कारण परीक्षा भी नहीं दे पाएँ। अर्थ की समस्या को निपटाने के लिए ट्यूशन भी देने लगे और इस तरह मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की।

पति-पत्नी जीवन-गाड़ी के दो पहिए होते हैं यदि इनमें संतुलन हो तो निर्वाह आसान हो जाता है किंतु सुयोग्य पत्नी के अभाव में इनका जीवन निरंतर क्लेश में ही डूबता-उतरता रहा। जीवन में स्थिरता का तारा टिमटिमाया, जब शिवरानी देवी से इनका दूसरा विवाह हुआ। कुछ समय स्कूल में अध्यापक पद पर भी रहे और हैडमास्टरी भी की। यह समय अपनी प्रतिभा को निखारने का था और फिर लेखन की गाड़ी चल निकली। आरंभ में नवाबराय नाम से उर्दू में लिखते थे। इनकी 'सोजेवतन' नामक कहानी संग्रह को अंग्रेजों द्वारा जब्त कर लिया गया था, बाद में हिन्दी में प्रेमचंद नाम से लिखने लगे। इनके द्वारा रचित रचनाएँ हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि हैं। लगभग 300 कहानियाँ और एक दर्जन उपन्यासों की रचना करने वाले प्रेमचंद ने अपने लेख और निबंधों को पत्रिकाओं के माध्यम से जनता के

Scanned by CamScanner

सम्मुख रखा। जितने प्रख्यात वे एक रचनाकार के रूप में हुए अपने समय के जागरूक संपादक के रूप में भी उतनी ही ख्याति अर्जित की। जागरण, हंस, माधुरी जैसी पत्रिकाओं का संपादन भी किया। उनके द्वारा लिखित साहित्य

प्रमुख कहानियाँ : पंच परमेश्वर, नमक का दरोगा, दो बैलों की कथा, ईदगाह नशा, कफन, शतरंग के खिलाड़ी, रानी सारन्धा, बूढ़ी काकी, पूस की रात आदि।

उपन्यास : गोदान, गबन, प्रेमाश्रय, कर्मभूमि, रंगभूमि, निर्मला सेवासदन।

नाटक : कर्बला, संग्राम, प्रेम की वेदी।

जीवनी : महात्मा सेख सादी, दुर्गादास

निबंध : कुछ विचार (दो भाग)

बाल साहित्य : कुत्ते की कहानी, जंगल की कहानियाँ, रामचर्चा मनमोदक।

इनके कथा साहित्य में जन जीवन और किसान के दर्द का विशद चित्रण मिलता है। उन्होंने जीवन भर संघर्षों, दुःख-दर्द, गरीबी, प्राकृतिक आपदा, भूख, अंधविश्वास, अज्ञान, घरेलू कलह, शोषण आदि को नजदीक से देखा, भोगा और साहित्य के माध्यम से सशक्त रूप में अभिव्यक्त भी किया। इन्होंने नारी पीड़ा, अनमेल विवाह, वृद्ध विवाह, अशिक्षा, छुआछूत अशिक्षा जैसी अनेक सामाजिक कुरीतियों और दुर्बलताओं को अपने कथा साहित्य का कथ्य बनाया।

वस्तुतः जब उन्होंने लिखना शुरू किया था, तब देश गुलाम था और जिस समय मृत्यु ने उनके हाथ से कलम छीनी तब भी देश गुलाम था अतः कहा जा सकता है कि उनका सारा साहित्य देश की गुलामी और सामाजिक विद्रुपताओं के विरुद्ध एक जिहाद था।

नमक का दरोगा

आलोच्य कहानी में प्रेमचंद ने असत्य, अन्याय और अनैतिक आचरण पर सत्य, न्याय और नैतिकता की विजय दिखाई है। मुंशी वंशीधर एक ईमानदार, धैर्यवान, बुद्धिवान तथा साफ दिल इंसान हैं जो शिक्षित हैं और जीवनगत अनुभवों के माध्यम से दुनिया आजमाने के लिए संसार-पारावार में उतर पड़ता है। नमक विभाग में दरोगा का पद प्राप्त कर लेता है जिसमें वेतन के साथ-साथ 'ऊपरी कमाई' का जुगाड़ भी है। ऊपरी कमाई को बरकत मानने वाले पिताजी प्रसन्न है। परिवार भी खुशी से फूला नहीं समाता, वहीं पड़ोसी ईर्ष्या का भारी भरकम टोकरा सिर पर उठा चुके हैं। कहानी में नया मोड़ आता है जब दरोगा वंशीधर जमुना किनारे पण्डित अलोपीदीन को अवैध नमक से भरी बैलगाड़ियों को पुल पार करने की इजाजत नहीं देता। अलोपीदीन बड़े विनम्र भाव से वंशीधर को लक्ष्मी के जाल में उलझाने का प्रयत्न करता है जिसमें

Scanned by CamScanner

वह असफल रहता है। अलोपीदीन को हिरासत में ले लिया जाता है। जब अदालत में हाजिर होने की बारी आती है तो अलोपीदीन जैसे 'सिंह' अपना सिंहत्व दिखा साफ बचकर निकल जाते हैं। वकीलों की बटालियन न्याय को खरीद पैसे वालों की झोली में डाल देती है। असत्य (अलोपीदीन) को वरी करते हुए सत्य (वंशीधर) को विवेकहीनता और उदण्डता का तमगा न्यायालय द्वारा पहनाया जाता है। सत्य के पक्षधर (वंशीधर) को परिवार द्वारा भी खूब कोसा जाता है। बाप, माँ, पत्नी सभी उसे अकेला छोड़ देते हैं और वह अपनों के बीच भी पराया हो नौकरी से भी मुअत्तिल कर दिया जाता है। इसी दौरान अलोपीदीन वंशीधर के घर 'सज्जन' बनकर आते हैं जिस पर घरवालों को यकीन नहीं होता है, किंतु अलोपीदीन स्टाम्प दस्तावेज दिखाकर जिद्द पर अड़ जाते हैं कि वंशीधर को अपनी सारी जमीन जायदाद का स्थायी मैनेजर नियुक्त किए बगैर वह द्वार से नहीं जाएगा। वंशीधर भी ना-नुकूर के बाद हस्ताक्षर कर स्वयं को सौभाग्यशाली मानता है। वस्तुतः कहानी का अंत सुखद है और हृदय-परिवर्तन की कथा रूप में गाँधी प्रभाव को स्वीकार भी विद्वानों द्वारा कर लिया गया है किंतु क्या वास्तव में अलोपीदीन का हृदय परिवर्तन हुआ है? क्या अलोपीदीन अहंकार बड़बोलेपन से युक्त उस तंत्र व्यवस्था का प्रतिनिधित्व नहीं करता जो छद्म से ईमानदारी को खरीदकर अपने अधीनस्थ करने का ही सफल प्रयास है? जिस काम को धन और बल के आधार पर नहीं किया जा सकता उसे विनम्रता बड़े ही सफलतापूर्वक से अजांम देती है, इसी का नाम छद्मव्यवस्था है।

पात्रों के रूप में वंशीधर सीधा, सरल और ईमानदार है जो ईमानदारी का कटु अनुभव करता है तो ईमानदारी उसके लिए नए रास्ते भी खोलती प्रतीत होती है। धन और धर्म के युद्ध में—"वंशीधर चुपचाप खड़े थे। उनके पास सत्य के सिवा न कोई बल था न स्पष्ट भाषण के अतिरिक्त कोई शस्त्र।" भ्रष्ट तंत्र व्यवस्था द्वारा वंशीधर की प्रशंसा करके कहानीकार ने उसके चरित्र को और ऊँचा उठा दिया है। अलोपीदीन भगवान से प्रार्थना करते हुए कहते हैं—"परमात्मा से यही प्रार्थना है कि वह आपको सदैव वही नदी किनारे का बेमुरोव्वत, उद्दण्ड, कठोर परंतु धर्मनिष्ठ दरोगा बनाए रखे।"

पण्डित अलोपीदीन एक घाघ और चलते पुर्जे हैं जो हर प्रकार से अपना काम निकलवाना जानता है। साम, दाम जो भी प्रयोग्य हो, उद्देश्यपूर्ण होना चाहिए। धन और बल काम नहीं आता तो विनयशीलता, प्रार्थना पर उतर आते हैं—"मैं ब्राह्मण हूँ जब तक यह सवाल पूरा न कीजिएगा द्वार से न हटूँगा।" 'पिताजी' निम्न मध्यवर्गीय उस व्यक्ति के रूप में आते हैं जो बदले माहौल में स्वयं भी बदल जाते हैं। बेटे को भी व्यवस्थानुरूप बनने की सलाह और नसीहत देते हैं—"नौकरी में आहदे की ओर ध्यान

Scanned by CamScanner

मत देना.... ऐसा काम ढूँढ़ना जिसमें कुछ ऊपरी आय हो.....ऊपरी आमदनी ईश्वर देता है उसी से बरकत होती है।'' पिता का कथन जहाँ व्यवस्था के मारे व्यक्ति के चरित्र को रूपायित करता है, वहीं पुत्र के चरित्र की उज्ज्वलता दिखाता है। इस तरह घटना प्रसंगों और कथनों के अध्ययन से चारित्रिक कमजोरियों और विशेषताओं को उजागर करने का प्रयास किया गया है जो प्रशंसनीय है।

प्रेमचंद की भाषा अनुभवों की गहराई से उपजी है अतः सहजता और सरलता उनकी भाषा का प्राण है। वे शास्त्रीय रूढ़ियों से अलग अपनी संवेदनात्मक निष्ठाओं को रचना का आधार बनाते हैं और जिंदगी के अनुभवों को टीका टिप्पणी, व्यंग्य, अनूठी उपमाओं द्वारा पाठक को गुदगुदाते चलते हैं। भाषा बहते पानी की भांति निश्छल और नितांत संप्रेषणीय, चित्रमय और व्यंजकता लिए हुए हैं।

उद्देश्य के रूप में कहा जा सकता है कि एक लम्पंट व्यक्ति के हृदय परिवर्तन की कथा लगने वाली वास्तव में व्यवस्था द्वारा खरीदे गए उस आम आदमी की व्यथा को यथार्थ बया करती है जो हमेशा 'शिकार' होता आया है और होता रहेगा। क्या ऐसा नहीं है? आप सोचने के लिए स्वतंत्र है।

Scanned by CamScanner